RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 74 अंक : 56
सृष्टि संवत् 1960853118
23 अप्रैल, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726
जालन्धर

वर्ष–74, अंक : 56, 20-23 अप्रैल 2017 तदनुसार 11 वैशाख सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आयु का प्रथम भाग सुकृत्त से बिताने का फल

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यर्या।
सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः।।

शब्दार्थ-ये = जो **अङ्गिराः** = अङ्गारों के तुल्य **इद्धाग्नयः** = प्रदीप्त है अग्नि जिनकी ऐसे होते हुए **प्रथमम् वयः** = आयु के प्रथम भाग को **शम्या** = शान्तिदायक **सुकृत्यया** = उत्तम क्रिया के साथ **आत्** = सर्वथा **दधिरे** = धारण करते हैं, वे मनुष्य **नरः** = अगुवा बनकर **पणेः** = पणि के, व्यवहारकुशल के **अश्वावन्तम्** = अश्वादि युक्त, **गोमन्तम्** = गौ आदि तथा **पशुम्** = देखने-भालने योग्य अन्य पदार्थ और **पणेः** = पणि के, व्यवहारकुशल, प्रशंसनीय मनुष्यों के योग्य **सर्वम्** = सभी **भोजनम्** = भोगसामग्री को **समविन्दन्त** = प्राप्त करते हैं।

व्याख्या-सामान्यरूप से शास्त्रों में आयु के चार भाग किये हैं। आयु का प्रथम भाग शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा के विकास, पुष्टि, वृद्धि तथा शुद्धि के लिए नियत है। मनुष्य-जीवन का लक्ष्य शान्ति-प्राप्ति है। यदि आरम्भ से उसके साधनों का अनुष्ठान किया जाए, तो अन्तिम अवस्था में शान्ति का प्राप्त होना अवश्य सम्भव है। यदि आरम्भ में कुटिलता, कदाचार आदि शान्ति-विघातक दुर्व्यसनों में व्यस्त हो गये, तो फिर उनको हटाना अत्यन्त कठिन है। फ़ारसी में एक कहावत है, जिसका भाव यह है कि 'जब स्थपति [घर आदि बनाने वाला शिल्पी] ने नींव की पहली ईंट ही टेढ़ी रखी, तो चाहे मकान को आकाश तक ले-जाओ, दीवार टेढ़ी ही रहेगी।' यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त वेद से ही अन्यत्र गया। इस सिद्धान्त को सम्मुख रखकर वेद जीवन के प्रथम भाग के सम्बन्ध में कहता है-

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया।

जीवनाग्नि को प्रदीप्त रखते हुए जो तेजस्वी जीवन के प्रथम भाग को शान्तिदायक सुकर्मों के साथ धारण करते हैं, अर्थात् जीवन के प्रथम भाग में अग्नि खूब प्रदीप्त रखना चाहिए। ब्रह्मचर्य द्वारा शरीरस्थ वीर्याग्नि, ज्ञानाग्नि आदि को प्रदीप्त रखना चाहिए। कर्म अच्छे हों, जिनका परिणाम शान्ति हो। अच्छे कर्मों की यही पहचान है। शान्तिदायक सुकर्मों से अग्नि को प्रदीप्त करने से ही अङ्गिरा = अङ्गार बनेगा।

मन्त्र के उत्तरार्ध में सदाचार का फल वर्णित हुआ है। जीवन की सब सामग्री सच्चरित को प्राप्त होती है। मनुजी ने [४।१५६] कदाचित् इसी उत्तरार्ध का अनुवाद करते हुए कहा है-

आचाराल्लभते ह्यायुरचारादीप्सिताः प्रजाः। आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्।।

आचार से सचमुच आयु (दीर्घायु) प्राप्त करता है, आचार से अभीष्ट, श्रेष्ठ सन्तान तथा आचार से अक्षय्य धन प्राप्त करता है और आचार के द्वारा समग्र दुष्ट लक्षणों का नाश करता है। ऋषि दयानन्द ने आचार का अर्थ 'ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियता' किया है। है भी ठीक। यही आचरण करने की वस्तु है।

इसके विपरीत मनुजी ने [४।१५७ में] दुराचारी की दुर्दशा का दिग्दर्शन भी करा दिया है-

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः। दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च।।

दुराचारी मनुष्य की लोक में निन्दा होती है, वह सदा दुःखी और रोगी रहता है और उसकी आयु भी थोड़ी होती है, अतः जीवन के आरम्भ से ही सदाचार का अभ्यास करना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

वनस्पतिक भोजन व सूर्य किरणों का सेवन करें

ले. -डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र. भारत चलाभाष ०९३५४७४५४२६

हमारे पास सात्विक बुद्धि होगी तब ही हमारे सात्विक गुणों में, वृद्धि सम्भव है। इस सात्विक बुद्धि के लिए वनस्पतियों वाला भोजन उत्तम है। इसके साथ ही सूर्य की किरणों का सेवन भी लाभप्रद होता है। इस तथ्य को यजुर्वेद के प्रथम अध्याय का यह बीसवां मन्त्र इस प्रकार उपदेश करता है :

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा।

दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः।

प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।। यजु. 1.20।।

मन्त्र में यह बताया गया है कि प्रकाश की हमारे आधारभूत जीवन में अत्याधिक आवश्यकता होती है। प्रकाशरूप सद्गुण अर्थात् उत्तम गुणों को पूर्ण करने वाली बुद्धि की आवश्यकता हमें होती है। यह बुद्धि सात्विक आहार से ही बनती है। यह सत्विक आहार क्या होता है ? आओ इस मन्त्र के पांच बिन्दुओं पर चिन्तन करते हुए सात्विक आहार के सम्बन्ध में जानने का यत्न करें-

१. पोषण में उत्तम धान्यः मन्त्र में कहा गया है कि तू धान्यम असि अर्थात् तू धान्य है अर्थात तू वनस्पति है। वनस्पति होने के कारण तेरे अन्दर पोषण की अद्वितीय शक्ति है। इस पोषणीय शक्ति के कारण ही तू मानव शरीर का बड़ी उत्तमता से पोषण करता है। तेरे सेवन से ही मानव का यह शरीर स्वस्थ बनता है, स्वस्थ शरीर से ही मन निर्मल होता है। जब मानव का शरीर स्वस्थ तथा मन निर्मल हो तो उसकी बुद्धि भी तीव्र हो जाती है। जब खुशी की अवस्था हो तो बुद्धि तेज़ी से कार्य करती है किन्तु शरीर दुर्बल होने से मन की निर्मलता नहीं रहती। कष्ट-क्लेष बने रहते हैं, यह सब बुद्धि को तीव्र नहीं होने देते। इसलिए यह मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हे प्राणी ! तेरे अन्दर बुद्धि की तीव्रता आवश्यक है। बुद्धि की तीव्रता के लिए मन को निर्मल बना। मन को निर्मल बनाने के लिए ऐसे उपाय कर कि तेरा यह शरीर स्वस्थ बन सके तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है कि तू वनस्पतियों से युक्त आहार का सेवन कर क्योंकि इन वनस्पतिक आहार से ही शरीर को पोषण मिलता है।

(क) दिव्य गुणों को प्रणीत कर

इस प्रकार अपनी बुद्धि को तीव्र बना कर हे प्राणि ! तू अपने अन्दर दिव्य गुणों को प्रणीत कर, उत्पन्न कर। तू जब अपने अन्दर सत्व की शुद्धि कर लेगा तब ही सात्विक गुणों का विकास होगा।

(ख) प्राण-शक्ति की वृद्धि

हे वनस्पतियों ! हम तुझे प्राण के विकास के लिए स्वीकार करते हैं। तेरे द्वारा हमारी प्राण शक्ति बढ़े। हम तुम्हारा सेवन इसलिए करते हैं कि हमारे प्राणों की शक्ति की वृद्धि हो, तेरे सेवन से ही तो हमारे प्राणों को गति मिलती है। तू ही हमारी उदान वायु को ठीक करने वाली है, इसलिए हम तेरा सेवन करते हैं। तेरे उपभोग से ही हमारे गले के अन्दर यह उदान वायु ठीक से गति करने वाली होती है। जब हमारे शरीर में यह उदान वायु संतुलित हो कर कार्य करती है, तब ही मानव की लम्बी आयु सम्भव हो पाती है।

इसलिए हे वनस्पतियो ! हम तुझे ग्रहण करते हैं, पूरे शरीर में व्याप्त करते हैं क्योंकि तेरे प्रयोग से ही हमारे समग्र शरीर में व्यान वायु को पैदा करना होता है, जिसके निर्माण का आधार तेरे अन्दर ही होता है। हम जानते हैं कि वनस्पतियों के प्रयोग से हमारा सम्पूर्ण नस-नाड़ी का जो संस्थान है वह ठीक से कार्य करने लगता है। इससे ही मानवीय मस्तिष्क ठीक से कार्य करने की क्षमता पाता है, अर्थात् ठीक बना रहता है।

२. दीर्घायु के लिए वनस्पतिक भोजन करें-मानव को परम पिता परमात्मा ने सौ वर्ष की आयु देकर इस धरती पर भेजा है। इसके साथ ही यह भी आदेश दिया है कि हे प्राणी ! मैं तुझे इस धरती पर भेज रहा हूं, इस आशय से भेज रहा हूँ ताकि तू इस धरती पर कम से कम एक सौ वर्ष तक का जीवन व्यतीत कर सके और वह जीवन भी ऐसा हो कि जो पूर्ण स्वस्थ रहते हुए हंसी-खुशी के साथ व्यतीत हो, कर्म करते हुए व्यतीत हो। स्पष्ट है कि प्रभु ने सौ वर्ष तक कर्म करने योग्य जीवन मानव को दिया है। इसलिए ही मानव इन वनस्पतियों को प्रयोग में लाता है ताकि उसका यह जीवन स्वस्थ रहते हुए कर्म करते हुए व्यतीत हो। मानव की कामना है कि वह जीवन पर्यन्त स्वस्थ रहते हुए कर्म करते हुए इस जीवन को व्यतीत करे। इसके लिए आवश्यक है कि वह वनस्पतिक भोजन करे। यह वनस्पतिक आहार ही है जो लम्बी आयु देने के साथ ही साथ जीवन को क्रियाशील भी रखता है। इसलिए मन्त्र वनस्पतियों से युक्त भोजन करने का आदेश देता है, सन्देश देता है, उपदेश देता है।

३. हम प्रतिदिन प्रातः सूर्य किरणों का सेवन करें-मन्त्र में जो तीसरी बात कही गई है वह है कि हम मात्र वनस्पतियों से युक्त भोजन करके ही सुखी नहीं रह सकते। इसके साथ ही साथ हम सूर्य की किरणों के साथ अपना सम्पर्क स्थापित कर अपने आप को स्वस्थ बनावें। इस पर हम विचार करें। प्रभु ने इस मन्त्र के माध्यम से हमें धान्य अर्थात् वनस्पतियों के उपभोग की प्रेरणा करते हुए सूर्य किरणों के सम्पर्क में रहने का भी उपदेश किया है। जब तक सूर्य की किरणों का सम्पर्क नहीं हो पाता कोई वनस्पति तब तक पैदा ही नहीं हो सकती। आप अपने बन्द कमरे के अन्दर किसी भी वनस्पति के बीज डाल दीजिये। इन बीजों को उत्तम से उत्तम खाद भी दीजिये तथा प्रति दिन यथा आवश्यक जल भी दीजिये किन्तु आप देखेंगे कि इन बीजों का बड़ी कठिनाई से अंकुर फ़ूटता है। यह अंकुर भी मुरझाया सा, टेढा-मेढा सा होकर बड़े धीरे से चलता है तथा कुछ दिनों के अन्दर ही मर जाता है, सूख जाता है। इससे यह तथ्य सामने आता है कि वनस्पतियों को पैदा करने, बढ़ने व फ़ूलने-फ़लने के लिए सूर्य की किरणों के दर्शन आवश्यक है। इसके बिना यह अपने जीवन के परिणाम तक नहीं पहुंच सकतीं।

कुछ ऐसा ही मानव जीवन के साथ भी होता है। हम देखते हैं कि जब एक व्यक्ति को बन्द कमरे में रखा जाता है, जिसमें सूर्य की किरणें प्रवेश नहीं कर सकतीं तो यह व्यक्ति कुछ दिनों में ही कमजोर होते हुए पीला पड़ जाता है तथा धीरे-धीरे इसके शरीर में रोग प्रवेश कर जाता है, उसके अंग ढीले पड़ने लगते हैं तथा रोगी हो कर कुछ काल में ही उसकी मृत्यु जो जाती है। इसलिए मन्त्र कहता है कि हे प्राणी ! तू अपने शरीर को सूर्य की किरणों के साथ जोड़। जब तू सूर्य के सामने जाता है तो यह सूर्य अपने किरण रुपी निर्दोष हाथों से (सूर्य की किरणें सब प्रकार के दोषों को, रोगाणुओं को समेट कर नष्ट करने वाली होती हैं, इसलिए इसे निर्दोष हाथों वाली कहा गया है) जो हितकारक तथा प्राणशक्तिदायी तत्वों को लिए हुए है, वह सब तुझे देगी।

इस प्रकार मन्त्र कहता है कि हे प्राणी ! तू प्रातः उठ, प्रातः उठकर सुर्याभिमुख हो कर इस की किरणों को ग्रहण कर तथा परमपिता का ध्यान कर, उसका स्मरण कर। इन हितकारक किरणों से तेरा शरीर रोग मुक्त होकर स्वस्थ हो जावेगा। स्वस्थ्य उत्तम होने से तू खुश रहेगा तथा तेरी दीर्घायु होगी और प्रभु की समीपता भी मिलेगी। यह तो हम जानते हैं कि उदय हो रहे सूर्य की किरणों में सब प्रकार के रोगाणुओं का नाश करने की

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....✍

विलक्षण व्यक्तित्व- महात्मा हंसराज

साधुता और सादगी की मूर्ति, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त, डी.ए.वी. आन्दोलन के प्रणेता महात्मा हंसराज जी एक महान् व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनका सारा जीवन वैदिक धर्म, आर्य सिद्धान्त और आर्य विचारधारा के प्रति समर्पित था। बलिदान के पथ का अनुसरण करते हुए इस महापुरूष ने अपना यौवन समाज सेवा में भेंट कर दिया। भारत में डी.ए.वी. आन्दोलन को आगे बढ़ाने में उनका नाम और काम सदा अमर रहेगा। त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी ने अपने जीवनकाल के 74 वर्षों में से 58 वर्ष परोपकार के कार्यों में ही बिताए। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के प्रथम प्रिंसिपल के रूप में उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीयों द्वारा चलाया गया कॉलेज भी अंग्रेजों द्वारा चलाए गए कॉलेजों का मुकाबला अच्छी तरह कर सकता है। कॉलेज के प्रथम अवैतनिक प्रिंसिपल के रूप में उन्होंने इस संस्था की जिस असाधारण योग्यता और निष्ठा के साथ सेवा की उसी का ही यह परिणाम है कि लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल के रूप में लगाया गया छोटा सा पौधा आज वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। राष्ट्र निर्माण के कार्यों में डी.ए.वी. संस्थाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। महात्मा हंसराज जी अपने जीवन में ऐसे कार्य कर गए हैं जिनके द्वारा वे आने वाली कई पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते रहेंगे। महात्मा हंसराज जी का जीवन एक आदर्श जीवन है।

महात्मा हंसराज जी का जन्म १९ अप्रैल १८६४ को होशियारपुर जिले क बजवाड़ा नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री चूनी लाल और माता का नाम श्रीमती हरदेवी था। महात्मा हंसराज ने जिस परिवार में जन्म लिया वह यद्यपि था तो निर्धन परन्तु मेहनती और स्वाभिमानी परिवार था। हंसराज जी के एक बड़े भाई भी थे जिनका नाम श्री मुलखराज जी था। माता-पिता दोनों ने निश्चय किया कि दोनों को अच्छी शिक्षा दी जाए। माता-पिता ने सोचा होगा कि बालक पढ़ लिखं कर घर की आर्थिक अवस्था सुधारेगा, परन्तु उन्हें क्या पता था कि उनका बालक एक बहुत बड़ा धर्म रक्षक, देश सेवक और महात्मा बनने वाला है। जो केवल अपने परिवार, कुल का ही नहीं अपितु राष्ट्र का नाम रोशन करने वाला बनेगा।

बचपन से ही हंसराज में महान् पुरूषों के गुण दिखाई देने लगे थे और बचपन से ही हंसराज का यह प्रभाव था कि उनका कोई साथी उनकी बात टाल नहीं पाता था। दूसरों का उपकार करने की भावना भी उनमें बचपन से ही थी। जब वे पढ़ते थे तभी से वे दूसरे पड़ोसियों के पत्र आदि पढ और लिख दिया करते थे। 12 वर्ष की आयु में उनके पिता का देहान्त हो गया था। आर्थिक कठिनाईयों का सामना करते हुए भी हंसराज ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और अन्ततः उन्होंने बी.ए. पास कर ली जो उस समय बहुत ऊंची डिग्री मानी जाती थी। यदि वह चाहते तो सरलता से सरकारी नौकरी करके धन-धान्य से परिपूर्ण हो सकते थे परन्तु उन्होंने अपना सर्वस्व आर्य समाज की सेवा में अर्पित कर दिया और परोपकार की भावना हंसराज जी को घर की सीमाओं में कैद नहीं कर सकी। महात्मा हंसराज जी ने ठीक समय पर अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

महर्षि दयानन्द की याद में 1886 में जब डी. ए. वी. स्कूल की स्थापना की गई तो एक सुयोग्य मुख्याध्यापक की आवश्यकता अनुभव हुई। महात्मा हंसराज जी ने अपने बड़े भाई श्री मुलखराज जी से सलाह करके अपने आपको अवैतनिक संस्था के लिए समर्पित कर दिया। महात्मा हंसराज चाहते तो अन्य संसारिक लोगों की तरह उच्च से उच्च पद प्राप्त कर लाखों की सम्पत्ति जुटा लेते। लेकिन जाति की दुरावस्था ने उन्हें बलिदान के मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। सारी आयु निर्धनता, तपस्या और त्याग में बिताते हुए संसार के कल्याण के लिए धर्म, देश और जाति की सेवा का प्रण लिया। होश सम्भालने से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्होंने देश से अज्ञानता को दूर करने का प्रयत्न किया। हिन्दु समाज को सुधारने और दुःखी, भूकम्प, अकाल, दुर्भिक्ष, महामारी, पीड़ितो की सेवा सहायता करने के लिए तत्पर रहे। उनकी निस्वार्थ सेवाओं और निष्काम प्रयत्नों से उन्हें हर क्षेत्र में पूर्ण सफ़लता मिली। उनका सारा जीवन तप, और त्याग का जीवन था। धन-दौलत, सुख-सम्पदा भोग ऐश्वर्य सबका त्याग किया। भाई द्वारा प्राप्त केवल चालीस रूपये मासिक पर गुजारा करते रहे। स्व-प्राप्त गरीबी में दुख के दिन काटना सबसे कठोर समस्या है। यक्ष के पूछने पर कि तप क्या है? युधिष्ठिर ने कहा था कि अपने कर्त्तव्य करते रहना ही तप है। दुख-सुख, रोग-अरोग, मान-अपमान की परवाह किए बिना अपने कर्त्तव्य का पालन करते जाना सच्चा तप है। महात्मा हंसराज जी ने अपने भाषण में कहा था कि मनुष्य जीवन का एक ध्येय होना चाहिए, एक केन्द्र जहां पहुंच कर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके। एक स्थान होना चाहिए जहां पहुंच कर गर्व से कह सके कि चाहे प्राण चले जाए, चाहे सब ओर नाश विनाश नाचने लगे तो भी वह लौटेगा नहीं, पीछे नहीं हटेगा। ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका मोल मालूम होता है। यह शब्द महात्मा जी के ही मुख को शोभा देते है, जिन्होंने जीवन का एक ध्येय मानकर उम्र भर तपना मंजूर किया।

त्याग की साक्षात् मूर्ति, सरलता एवं सादगी का सजीव चित्र, निरभिमानता के आदर्श महात्मा हंसराज का जीवन अनुकरणीय है। रहने का एक छोटा सा कमरा, लकड़ी का एक तख्तपोश, दो टूटी हुई कुर्सियां और कपड़े मोटे-मोटे शुद्ध स्वदेशी यह उनका वेश था। महात्मा जी के जीवन का एक ही उद्देश्य था कि ऋषि का मिशन सफल हो ताकि हिन्दु जाति में नया जीवन आए। वह कुरीतियों और वहमों से बचे, एक ईश्वर की उपासक हो और पराधीनता की बेड़ियों को काट सके। महात्मा हंसराज जी ने महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रति अर्पण कर दिया।

वस्तुतः महात्मा हंसराज जी श्वेत वस्त्रों में ही सन्यासी थे। जब 1933 में अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द के निर्वाण की अर्ध शताब्दी पर कुछ सन्यासियों ने वीतराग तपस्वी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज से निवेदन किया कि वे उनके साथ चलकर महात्मा हंसराज जी को चतुर्थाश्रम की दीक्षा लेने के लिए प्रेरित करें। तब वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि निर्द्वन्द तथा सभी प्रकार की ऐषणाओं से मुक्त महात्मा जी किसी भी कमण्डलधारी सन्यासी से कम नहीं हैं और मात्र कपड़े रंगकर सन्यास का बाना पहनने की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे जैसे सैकड़ों साधु उन पर न्यौछावर है। ऐसा व्यक्तित्व था महात्मा हंसराज का, जिस पर एक वीतराग सन्यासी भी न्यौछावर था।

तपस्वी, समाज सेवा में समर्पित महात्मा हंसराज जी का सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए समर्पित था। जहाँ उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में डी.ए.वी. की स्थापना करके एक नई क्रान्ति को जन्म दिया वहीं उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में अपना योगदान दिया। चाहे भूकम्प हो, अकाल हो, महात्मा जी हमेशा मानवता के कल्याण के लिए समर्पित रहे। 19 अप्रैल को महात्मा हंसराज जी के जन्मदिवस पर हम उनके मानवता के पथ-प्रदर्शक कार्यों को अपने जीवन में अपनाएं।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

इष्टापूर्त कर्म है यज्ञ

-ले० आचार्य महावीर सिंह अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा

हमारी भारतीय संस्कृति यज्ञों की संस्कृति है। भारतीय संस्कृति ही क्यों सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति ही यज्ञीय संस्कृति है। यज्ञ के बिना संसार का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। यज्ञ से यह संसार अस्तित्व में आया। यज्ञ से ही यह चल रहा है और जब यज्ञ की पूर्णाहुति हो जाएगी तो संसार का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। जैसे प्रतीकात्मक अग्निहोत्र रूपी यज्ञ की पूर्णाहुति पर न घृत रहता है, न सैमिधाएं, न हव्य ही रहता है और न ही अग्नि की लपटें रहती हैं, न ही याजकों की क्रियाएं, प्रतिक्रियाएं ही रहती हैं, और न ही आम लोगों की आवाजाही रहती है। सब ओर शांत व निस्तब्धता का वातावरण- होता है। यज्ञ में समर्पित सभी पदार्थ सूक्ष्म रूप में आकाश में व्याप्त हो जाते हैं। यज्ञ में उद्गाताओं द्वारा उच्चरित वेदों की स्वरलहिरयां आकाश में समा जाती हैं। ठीक उसी प्रकार पूर्णाहुति के बाद इस संसार रूपी यज्ञ की समाप्ति भी हो जाएगी। दृष्टिगोचर अगोचर रूप इस संसार के सभी पदार्थ उसमें समाहित हो जाएंगें। उस अवस्था को प्राप्त हो जाएंगे जिसे हम प्रलयकाल की अवस्था कहते हैं। संसार के अस्तित्व में आने से पूर्व की उस प्रलयावस्था की झांकी प्रस्तुत करते हुए मनु जी महाराज कहते हैं-

आसीदिदं तमोभूतम-प्रज्ञात-मलक्षणम्।

अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्त-मिवर्बतः।।

अर्थात्-सृष्टि रूपी यज्ञ से पूर्व प्रलय की अवस्था में यह संसार अन्धकार युक्त और लक्षणों से रहित संकेत के अयोग्य तथा तर्क द्वारा और स्वरूप से जानने के अयोग्य सब ओर निन्द्रा की सी अवस्था में था। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में स्वयं वेद भगवान जी कहते हैं-

नासदासी न्यो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमापरोयत्।

किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्नम्भः।

किमासीद् गहनम् गभीरम्।।

नामृत्युरासीदमृतम् न तर्हि।

न रात्र्या अह्न्न आसीत् प्रकेतः।।

आनीदवातं स्वधयातदेकं।

तस्माद् धान्यन्न परः किं चनासः।।

ऋ. 10-129-1-2-

अर्थात्-सृष्टि से पूर्व में न सत् था न असत् था यानि न ही यह व्यक्त संसार ता न अव्यक्त न दिखाई देने वाला संसार ही था। न रज था न रजोमय लोक था। न अन्तरिक्ष था न ही अन्तरिक्ष से ऊपर व नीचे रहने वाले, द्युलोक व मृत्युलोक आदि लोक लोकान्तर ही थे। न तब मृत्यु थी न ही अमृत था। यानि नित्य रहने वाले काल व्यवहार भी नहीं थे। न रात थी न दिन था। बस था तो केवल कम्पन से रहित प्रकृति से युक्त व एकमात्र वह महान परमेश्वर चेतना का व्यवहार करता हुआ था। दूसरा कोई उसके समान उससे बड़ा व उस जैसा कोई नहीं था। अर्थात् नृचक्षस चेतन स्वरूप वह परम परमेश्वर ही थे जो कि सभी कालों में सभी अवस्थाओं में निर्लिप्त भाव से बिना गति किए ही सब ओर व्याप्त होकर रहते हैं। जब उनके मन में सृष्टि निर्माण रूपी यज्ञ का संकल्प उठता है देवता यानि पृथ्वी, जल, तेज वायु, आकाश सूक्ष्म रूप में परमाणु रूप में वर्तमान यह देवों का समुदाय आत्मसमर्पण यानि अपने आप को परमात्मा के संकल्प रूपी यज्ञ में आहूत कर इस संसार रूपी यज्ञ को आरम्भ करते हैं। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में स्पष्ट लिखा है-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

परमेश्वर के संकल्प पर सर्वहुत यज्ञ करने वाले देवों ने जब सृष्टि रूपी यज्ञ आरम्भ किया तो उसके बाद विराट पुरुष पैदा हुआ, भूमि पैदा हुई, लोक लोकान्तर पैदा हुए। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेदों का प्रादुर्भाव हुआ। अश्व आदि प्राणी हुए.....।'' देखें पुरुषसूक्त में सृष्टि उत्पति का पूर्ण विवरण।

मेरा लिखने का व कहने का अभिप्राय है कि यज्ञ ही सृष्टि का आधार है। यज्ञीय संस्कृति किसी सम्प्रदाय विशेष की नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति है। इसे न मानने वाला अथवा सम्प्रदाय विशेष का बताने वाला। चमकते, दमकते सूर्य को देखते, महसूस करते हुए भी मैं सूर्य को नहीं मानता यह कहने वाले जन-जन के सन्ताप को हरने वाले, शीलतला को प्रवाहित करने वाले स्वच्छ श्वेत किरणों से सम्पूर्ण लोकों को धवन करने वाले चन्द्रमा की शीतल छाया का उपयोग करते हुए भी उसे न मानने वाले के समान है। इसके लिए शास्त्रकार कहते हैं-

सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्र विहितम्।

मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।।

अर्थात्-संसार में सबका उपाय है पर मूर्ख का कोई उपाय नहीं है। यज्ञ सृष्टि का आधार है तो है इसे कोई माने अथवा न माने। इससे क्या फर्क पड़ता है। गीता में श्री कृष्ण भी कहते हैं-

सह यज्ञा प्रजाश्रृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।

अनेन प्रसविश्यध्वं एशनोऽ स्त्विष्ट कामधुक्।।

अर्थात्-सृष्टि के आदि में यज्ञ के द्वारा प्रजाओं का निर्माण करने के बाद प्रजापति ने प्रजाओं को आदेश दिया कि हे मेरे औरषपुत्रो! तुम इस यज्ञ का सहारा लेना, इस यज्ञ को बढ़ाना। आप लोगों के द्वारा वृद्धि को प्राप्त यह यज्ञ तुम्हारे इष्ट कामनाओं को पूर्ण करने वाला होगा। तुम्हारी समस्त मनोकामनाएं इससे ही पूर्ण होंगी। इससे ही तुम्हें अचल सुख सौभाग्य की प्राप्ति होगी। जन्म जन्मान्तरों से जिस की तलाश में यह तुम्हारी आत्मा भटक रही है। उस परम सुख स्वरूप परम तत्व की प्राप्ति भी तुम्हें इसी यज्ञ से होगी। वेद में भी कहा है- **ईजानः स्वर्गं यान्ति।** यानि यज्ञ करने वाले सीधे स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। प्रजापति के इस आदेश का अनुपालन मनुष्य समाज जब तक करता रहा तब तक संसार में सब ओर सुख व शान्ति का साम्राज्य था। लोगों के चरित्र अच्छे थे, आचार अच्छा था, व्यवहार अच्छा था, खान-पान अच्छा था, परोपकार, जनकल्याण की भावना बलवती थी। स्वार्थ का परित्याग कर परमार्थ के लिए लोग जीते थे। दूसरों के लिए मर मिटने का मादा सब में होता था। समय पर वर्षा होती थी। समय पर माता वसुन्धरा पुष्पित व फलवती होती थी। औषधियां, वनस्पतियां समय पर उगती। जन-जन के सन्ताप को हरती थी। न किसी को किसी से भय था और न ही किसी का डर था।

अभयं मित्राद अभयममित्रात् अभयम् ज्ञाताद् अभयं परोक्षात्।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रम् भवन्तु।

अर्थात्-हे प्रभो। हमें मित्रों से भय न हो। शत्रुओं से भी भय न हो। ज्ञात पुरुषों से भय न हो। अज्ञातपुरुषों से भी भय न हो। हे जगदीश्वर ! सारी दिशाएं और उसमें रहने वाले सभी प्राणी हमारे मित्र बन जाएं। यह वेद की भावना सब ओर चरितार्थ होती थी यज्ञों के माध्यम से। यज्ञोमय जीवनों से, जब सबके कल्याण के लिए भावनाएं संप्रेषित की जाती थी। सबकी भलाई के लिए यत्न किए जाते थे। तो किसी से किसी को भय भी कैसे हो सकता था। याजक पुरुष स्वार्थ का परित्याग कर जब परमार्थ के लिए जीने लगता है तब वह अजातशत्रु बन जाता है। उसका कोई शत्रु होता ही नहीं। रात्रि उसकी सहचरी बन जाती है। दिन उसका सखा हो जाता है। दिशाएं उपदिशाएं उसके बन्धु बान्धव बन जाते हैं। द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक उसके लिए शान्ति दर्शाने लगते हैं। पृथ्वी उसके सुख का कारण बन जाती है। लोकपाल, दिगपाल उसके लिए सब प्रकार के ऐश्वर्यों को उड़ेलने लगते हैं। राम राज्य की हम कामना करते हैं। उसमें यही तो सब होता था। महाराजा अश्वपति की घोषणा का उल्लेख आज भी अपने प्रवचनों के अन्दर गर्वपूर्वक करते हैं। उन्होंने कहा था-

नमेस्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।

नानाहिताग्निः नाऽविद्वान नः स्वेरी स्वेरिणी कुतः।।

मेरे राज्य के अन्दर सभी लोग याजक हैं। यज्ञ करने वाले हैं। इसलिए न कोई चोर है, न शराबी है, न कोई मूर्ख है और न कोई स्वेच्छाचारी पुरुष है। जब स्वेच्छाचारी पुरुष ही नहीं है तो स्वेच्छाचारिणी स्त्री कैसे हो सकती है। यज्ञ का आश्रय लेकर राजा प्रजाओं के साथ न्याय करता था। प्रजाएं भी राजा को अपने आय का षष्ठांश धर्मपूर्वक समर्पित करते थे। रोग, शोक, आधि, व्याधि का ताण्डव नृत्य नहीं होता था। क्योंकि यज्ञों के कारण जल शुद्ध होता था, वायु शुद्ध होती थी, शुद्ध जल व वायु से उपार्जित अन्न, कन्दमूल व फल भी पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक होते थे। दुधारू गौवें होती थीं जिनके कारण घी व दूध की नदियां बहती थी। यह था प्रजापति के आदेश का अनुपालन करने का फल, यह था यज्ञों का प्रभाव। इष्ट अभिष्ट कामनाओं की पूर्ति यज्ञों से हुआ करती थी। हर कोई अपने इष्टापूर्ति हेतु यज्ञों का सहारा लेता था। पर जब से मनुष्य समाज ने प्रजापति के उपदेश को नजर अन्दाज करना शुरू किया तब से वह नाना प्रकार के आदि व व्याधियों से ग्रसित हो गया। विभिन्न प्रकार के व्यसनों में फंस गया। जिनके कारण घोर कष्टों में घिरा इसका जीवन दूभर हो गया है। चोरी, डकैती, अनाचार, पापाचार, दुराचार का तान्डव नृत्य सब ओर देखने को मिल रहा है। कही पर स्वार्थ में अन्धे लोग धन के लिए मासूमों का अपहरण कर उनकी हत्याएं कर रहे हैं तो कहीं पर कामान्ध नर पिशाच अबलाओं, बालाओं के सतित्व को नष्ट कर रहे हैं। तार-तार कर रहे हैं। नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं। यहां तक कि साल दो साल की बच्चियों के साथ हैवानियत का नंगा नाच कर रहे है। उन्हें भी नहीं छोड़ रहे है। कहीं पर तो इतना सब कुछ करने पर भी वे अधर्मी लोग बस नहीं करते। उन बेबसों की वे हत्या भी कर देते हैं। कहां तो भगवान के द्वारा परमात्मा से प्रार्थना की गयी है कि

अभंय न करत्यन्तरिक्षम् अभयंद्यावा पृथिवी उभेइमे।

अभयं पश्चादभयं पुरस्ता-दुत्तराद धरादभयं नो अस्तु।।

हे प्रभो ! आप अपनी कृपा से हमारे हृदय मन्दिर को निर्भय बना दो। हमें किसी से कोई भय न हो। अन्तरिक्ष, लोक द्युलोक, पृथ्वी लोक इन सभी को हमारे लिए निर्भय बना दो। इन लोकों में जहां भी विचरण करने का अवसर मिले वहीं हमें निर्भयता का वातावरण मिले। अथवा हमारे मन मस्तिष्क में किसी भी प्रकार का भय न हो वे निर्भय रहे। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष स्थानों से ऊपर व नीचे के स्थानों से कही से भी कोई भय न हो। उसके विपरीत आज सब ओर हर समय पग-पग पर भय व आशंका का वातावरण है। आज भाई से बहन सुरक्षित नहीं, बाप से बेटी भयातुर है, रिश्तों में जो भी जितना नजदीक है उतना ही उनसे भय है। जब नजदीकियों से आज का समाज सुरक्षित नहीं तो आम लोगों से उसकी सुरक्षा कैसे सम्भव हो सकती है। दिन दिहाड़े राहगीरों को लूटा जा रहा है। भीड़-भाड़ वाले इलाको से भी नराधम, दुकानों, बैंको, घरों में लूटपाट मचाते नहीं डरते। जनता की सुविधा के लिए बैंको द्वारा स्थापित एटीएमों को तोड़ा जा रहा है। जो टूटते नहीं उन्हें उठा लिया जा रहा है। स्वार्थ में अन्धा व्यक्ति भविष्य में इसका क्या परिणाम मिलेगा इसकी परवाह किए बिना घोटाले पर घोटाला किए जा रहा है। वर्तमान में जीता हुआ, चोरी, रिश्वतखोरी से अपने भाग्य को चमकाने में लगा है। लाखों-करोड़ों की धन दौलत इकट्ठा करने में लगा हुआ है। साधारण से दिखने वाले चपडासी के घर पर जब छापा डलता है तो करोड़ों की सम्पदा का पर्दाफाश होता है। जो बड़े-बड़े पदों पर बैठे हैं उनके तो कहने ही क्या है। कहां पर तो धर्मशास्त्र चर्तुवर्ग का क्रम दर्शाते हुए कहते हैं-धर्म, अर्थ, काम मोक्ष अर्थात् धर्मपूर्वक कमाया गया अर्थ कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है और जिसकी कामनाएं शेष नहीं रहती उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। उसे संसार में भटकने की जरूरत नहीं होती। इसके विपरीत अर्थ को आगे रखकर सब काम हो रहे हैं। इसीलिए सब ओर अशान्ति व अराजकता का साम्राज्य छाया हुआ है। सुख के लिए महान यत्न करता हुआ भी मनुष्य कष्टकारी दु:खों को प्राप्त कर व्यथित हो रहा है। मनुष्य चाहता तो सुख है पर दु:ख मिल रहा है। चाहता तो लाभ है पर हानि हो रही है। मान व सम्मान की चाहना करता है पर अवमानना गले में पड़ रही है। यह सब प्रजापति के उपदेश को, उनके आदेश को अपने से तिरोहित करने का परिणाम है। प्रजापति के द्वारा निर्दिष्ट लक्ष्य को आंखो से ओझिल करने का परिणाम है। आओ अगर हम अपनी वान्छित मनोकामाओं को पूर्ण करना चाहते हैं, जीवन में अभिलषित सुख सौभाग्यों से अपनी झोलियां भरना चाहते हैं, अनुपम शान्ति को प्राप्त करना चाहते हैं तो आओ यज्ञों का आश्रय लें। यज्ञीय संस्कृति को अपनाएं। वेद के अनुसार **द्यौ शान्ति:, अन्तरिक्षं शान्ति:, पृथ्वी शान्ति:, आप: शान्ति:, औशधय: शान्ति:, वनस्पतय: शान्ति: विश्वेदेवा: शान्ति: ब्रह्मशान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामा शान्ति रेधि।** की कामना पूर्ण करना चाहते हैं तो यज्ञ के अलावा यज्ञीय संस्कृति के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

नान्यपन्था विद्यतेऽनाय: यह वेद की भी मान्यता है। आज संसार प्रदूषित वातावरण से परेशान है। उसके लिए व्यय साध्य अनेकानेक उपाय किए जा रहे हैं पर दूषित पर्यावरण रूपी शैतान की आंत घटने की बजाय बढ़ती जा रही है। जिसके कारण कई नई से नई असाध्य बीमारियों से आज का समाज ग्रसित है। इन सबसे मुक्ति पाने का एक मात्र साधन यज्ञ ही है। यज्ञ का सहारा लें, इन सब समस्याओं का अन्त स्वत: ही हो जाएगा। आज समाज में विभिन्न प्रकार की पूजा पद्धतियां, देवीय व पिशाचीय शक्तियों को सन्तुष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीके अपनाएं जाते हैं। इष्टों व पितरों को तृप्त करने के लिए अनेकानेक व्यय साध्य उपक्रम किए जाते हैं। परोक्ष, अपरोक्ष उन पितरों की तृप्ति का यह यज्ञ सर्वोत्तम उपाय है। जिसको आज का समाज सर्वथा भुला बैठा है। इसीलिए ठोकरें खाने के लिए विवश है। आओ हम लोग जो अपनी संस्कृति में आस्था रखते हैं यज्ञों का सहारा लेकर जहां हम स्वयं इन यज्ञों को करें। इनका प्रचार पसार भी करें। लोगों की यज्ञों में आस्था जगे ऐसे उपक्रम करें। सुखकारी, शान्तिदायक, परम कल्याणकारी, इष्ट व कामनाओं की पूर्ति वाले इन यज्ञों को मानव समाज अपनाए। इसके लिए प्रयास करें। दयानन्द मठ चम्बा में पूज्य स्वामी जी महाराज सदा इन्हीं प्रयासो में लगे रहे। इसीलिए वृहद्, वृहतर, दीर्घकालिक, दीर्घसत्रीय यज्ञों का आयोजन यहां पर करते रहे हैं। अब आगे इन यज्ञों की श्रृंखला को जारी रखना और आगे बढ़ाना हम सब का कर्तव्य है। इसके लिए संस्था के साथ आप लोग सम्बद्धता बनाए रखे। यहां संचालित यज्ञकार्यों में सोत्साहपूर्वक बढ़-चढ़ कर भाग लें। संस्था के लिए अपनी आहुतियां प्रेषित करते रहें। 3 से 5 मई को पूज्य चरणों के जन्मदिन को लक्ष्यकर यज्ञ, सत्संग व लंगर का आयोजन करना चाह रहा हूं। पूज्य चरण पुण्यतिथियों को मनाने के पक्षधर नहीं थे। अत: उनके जन्मदिन को निमित्त बनाकर उन्हें सामूहिक रूप से श्रद्धांजली देंगे। उनकी कृतियों को स्मरण करते हुए, उनके व्यक्तित्व के प्रति नतमस्तक होते हुए, उनके श्री चरणों में पुष्पांजलियां अर्पित करेंगे। श्रेष्ठतम यज्ञकर्मों की श्रृंखला जारी रखने के लिए यह बहाने हैं। सत्संग व आपसी मेलमिलाप के लिए यह आयोजन किए जाते हैं। एक सुन्दर माहौल व वातावरण के सृजन हेतु प्राचीन काल से आश्रमों में ऐसे आयोजन किए जाते रहे हैं। जिनके कारण वह स्थान तीर्थ यानि दु:खों, पापों से तारने वाले तथा अनुपम शान्ति व अपार सकून देने वाले बन जाते थे। आज भी उन स्थानों पर शान्ति की बयार बहती है। आओ इस स्थान को भी महान कल्याणकारी तीर्थ हम सब मिलकर बनाएं जिसके लिए पूज्य स्वामी जी ने महान तप तथा सघन साधना की। जिनके अणु परमाणु इसके वायुमण्डल में निरन्तर भ्रमण कर रहे हैं। हम लोगों ने तो उस उपक्रम को जारी रखना है। गीताकार के शब्दों में, **''श्वासों का क्या भरोसा आए या न आए, जो कर्म नित्य करता प्रभु न उसे भुलाए।''** इसीलिए इन शुभ कर्मों में अपनी भागीदारी अवश्य बनाएं। मैं आप लोगों का आवाहन ही कर रहा हूं। शेष कर्म तो आपके हाथ में है। अत: आओ इस इष्ट कल्याणकारी समस्त मंगलकामनाओं को पूरा करने वाले यज्ञ रूपी दिव्य नाव में बैठकर दुस्तर संसार सागर को आसानी से पार कर दिव्य लोकों को प्राप्त करें।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम स्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

मेरी आयु भी ज्यादा नहीं थी और गरम मिजाज के लिये कुप्रसिद्ध था। मैंने कहा-इससे आपको क्या मतलब ? वह तो और भी आक्रामक मूड़ में आ गए सब लोग जानते है कि आर्यसमाज के कार्यक्रम में अप्रतिम विद्वान संन्यासी की दक्षिणा तुलनात्मक रूप में भजनोपदेशक से अधिक ही होगी। यह प्रसंग यही छोड़ता हूँ।

आर्यजगत के दो प्रतिष्ठित संन्यासियों की बात-दोनों आर्य समाज के कार्यक्रमों में विभिन्न वर्षों से आमान्त्रित थे, दोनों ने ही एक जैसी बात कही थी-तुम लोग बराबर ही दयानन्द की रट लगाते रहते हो ? क्या दयानन्द से अधिक काम और किसी ने नहीं किया ? मैं पूर्णतया निरीह, अल्पज्ञ, अवाक् रह गया। संन्यासियों में भी द्वेष भावना और वह भी उसके प्रति जिसके ज्ञान के प्रकाश में स्वयं प्रतिष्ठित हुए हो। अब वे दोनों संन्यासी स्वर्गस्थ हैं। कार्यक्रम का संचालन मंत्री का ही दायित्व होता है। हमारे आर्य समाज में भी यही परंपरा पचास वर्षो से अधिक समय से चली आ रही थी लेकिन परिस्थितियाँ बदल गयी थी। मंत्री निर्वाचित होने का सौभाग्य न मिलने पर, प्रत्येक अवसर पर कोई न कोई कह उठता-अतिथि को माल्यार्पण करना, मंच संचालन करने का क्या आपका ही अधिकार है ? ये काम और लोग भी कर सकते है। इन लोगों के जी की जलन शांत करने के लिये इन कार्यों से अपने आपको पृथक कर लिया।

अभी मेरे कुछ लेख ही पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे। रविवारीय सत्संग के पश्चात् प्रबुद्ध आर्य समाजियों ने प्रतिक्रिया दी-फलाँ-फलाँ सभासद का लेख भी प्रकाशित हुआ था। उच्च पद से सेवानिवृत्त एक सभासद ने कहा-मैं भी युवावस्था में बहुत कुछ लिखता था। अभी भी कुछ पुराने लेख पड़े हैं। एक रविवार को अपना प्रकाशित लेख ले आए और पढ़ा भी एक अन्य प्रतिक्रिया थी जिसमें ईर्ष्या की स्पष्ट बदबू थी और काफी लम्बी भी चली। खुल्लर जी ने कुछ 'जुगाड़' लगा लिया होगा तभी इनके लेख प्रकाशित हो रहे है, ये सब प्रतिक्रिया मेरे प्रति स्नेह व सम्मान की सूचक तो नहीं कहीं जा सकती। डाह, जलन, ईर्ष्या, द्वेष का ही स्पष्ट प्रतीक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा मेरा अभिनन्दन-आर्य समाज काकड़वाड़ी के स्थापना दिवस वर्ष प्रतिपदा, गुडी पडवा 2016 पर प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई और आर्य समाज के संयुक्त तत्वावधान में विद्वत सम्मान के अन्तर्गत अभिनन्दन-पत्र, स्मृति-चिन्ह शाल, फूल माला और 25 हजार राशि भेंट कर मेरा सम्मान किया गया। यह अनेक जन की ईर्ष्या का कारण बनेगा, इससे मैं भलीभांति परिचित हूं। मेरा तो योगदान इतना ही था कि नवीं मुम्बई निवासी मेरे परिचित प्राचार्य चन्द्र-कान्त मोघे के दामाद के हाथ से 'ऋषि अर्पण' आर्य समाज नवीं मुम्बई भिजवाई थी। नवीं मुम्बई आर्य समाज के प्रधान श्री बांगिया जी ने वह पुस्तक आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के यशस्वी मंत्री श्री अरूण कुमार अबरोल जी को दी। अबरोल जी को अन्य एक प्रति बोरीवली मुम्बई निवासिनी मेरी नातिनी सुश्री नीति सिब्बल ने भी दी। अवरोल जी ने सभा प्रधान मान्यवर मिठाई लाल सिंह जी से चर्चा की इसमें मुझे विद्वत सम्मान से अलंकृत करने का निर्णय लिया गया। व्यक्तिगत रूप से मैंने इन महानुभावों के दर्शन भी नहीं किए थे।

कुछ अनुभव कार्यालयीन जीवन से-अपने सचिव की आसन्न सेवानिवृत्ति और उससे पहिले लम्बी अवधि के लिये अवकाश पर जाने के कारण कार्यालय प्रमुख महालेखाकार महोदय आदरणीय सुधा साहब ने सचिव की खोज प्रारम्भ की। अन्य नामों के अतिरिक्त मेरा नाम भी सुझाया गया। सचिव पद लेखाधिकारी का ही होता है और मैं उस समय सहायक लेखाधिकारी था। महालेखाकार महोदय ने मेरा चयन किया। इस चयन में मेरा योगदान शून्य होने पर भी न जाने कितने लेखाधिकारियों के जी की जलन का कारण बना, वे जानते होंगे या उनका परमात्मा।

मुझे अनुभाग अधिकारी प्रोन्नत हुए दो या तीन वर्ष ही हुए थे आपातकाल के कारण पूरा देश कम्पायमान था। मैं यथावत काम करता रहा। पूरा नाम भूल रहा हूँ। श्री सिंह हमारे ग्रुप के प्रमुख थे लेखाधिकारी पद पर आसीन। कार्य और व्यवहार का वार्षिक मूल्यांकन जिस प्रपत्र में किया जाता है उसे कैरेक्टर रौल कहते है और आगामी प्रोन्नति का आधार ही वही प्रपत्र होता है। यह अत्यन्त गोपनीय रहता है, खासकर सम्बन्धित कर्मचारी से। मोतीमहल में मेरा कार्यस्थल ग्राउन्ड फ्लोर पर था और श्री सिंह का चैम्बर ऊपरी मंजिल पर जिसके जीने बहुत ऊंचे और घुमावदार थे। पूरे आपातकाल की अवधि में सिंह साहब अनुभाग में निरीक्षण के लिये नहीं आए जबकि अन्य अधिकारी दिन में दो-तीन चक्कर लगाते थे। मैंने उनसे कहा कि आप भी कभी-कभी आ जाया करें। उनका उत्तर था, सब ठीक चल रहा है फिर क्यों आऊं ? कार्य रिपोर्ट तो उनके पास जाती ही थी। एक दिन एक वरिष्ठतम लेखाधिकारी महोदय मेरे अनुभाग के पास से निकल रहे थे। मुझे देख कर रूक गए। मुझसे पूछा-तुमने ऐसा क्या जादू किया, चक्कर चलाया कि सिंह साहब ने हाल ही के छोकरे को सभी कैटेगरी में ए-सर्वोत्तम का रिमार्क दिया। उनका यह कथन द्वेष की किस श्रेणी में रखा जावेगा? मैं तो अत्यन्त खुद्दार पिता जी की घुट्टी में मिली सीख का 38 वर्ष के सेवाकाल में मनोयोग पूर्वक पालन कर कार्य करता रहा। सीख थी-पूरी मेहनत और मन लगा कर काम करना। स्वाभिमान बेच कर जीना नहीं पड़ेगा।

कार्यालय प्रमुख महालेखाकार महोदय लेखाधिकारियों की मीटिंग बुलाते ही थे। मुझे नहीं मालूम कि एकाग्र चित्त से सुनने के कारण या जिस काम के निर्देश देने के लिये मीटिंग बुलाई गई थी, पहिले ही पूर्ण कर लेने के कारण झपकी ले लेता था। वैसे ही जैसे युवा हृदय सम्राट राहुल गांधी लोकसभा में गम्भीर चर्चा के दौरान ले लेते हैं। एक ईष्यालु सहयोगी ने धीरे से पड़ौसी अधिकारी से कहा ए. जी साहब हमको 'लतिया' रहे हैं और खुल्लर झपकी ले रहा है, उससे कुछ नहीं कहते।

द्वेष के अन्य कारण व उदाहरण-द्वेष के कारण ही 'मैं' की तृप्ति के लिये मनुष्य अनावश्यक अद्भुत कार्य करता जाता है। 50-60 के दशक में हमारे प्रदेश के एक मुख्यमंत्री का निज निवास व्यापक चर्चा का विषय बना रहा। उस जमाने में निवास की लागत दस करोड़ बताई जाती थी। आज के युग में तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने हजारों करोड़ रूपये का परिसर बनवाया है। मुकेश अम्बानी मुम्बई में दस हजार करोड़ का बंगला बनवा कर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। करोड़ों भारतीय जन में कितनी ईर्ष्या, कितना विद्वेष जाने-अनजाने में पैदा किया, इसकी उन्हें खबर ही नहीं, चिंता भी नहीं, परवाह भी नहीं। रतन टाटा ने टिप्पणी की थी कि मकान पर इतना अधिक व्यय करने की अपेक्षा जन कल्याण पर व्यय किया होता तो ज्यादा अच्छा होता। मेरे कनिष्ठ भ्राता लव कुमार जी ने प्रसंग चलने पर बताया था कि जमशेद जी टाटा से लेकन रतन टाटा तक ने अपनी व्यावसायिक सफलता से भी अधिक राष्ट्र कल्याण, जन कल्याण का ध्यान रखा है। वे आज भी उस देश के उपकार का ऋण चुकाते है, जिसने ईरान से विस्थापित पारसियों को आश्रय दिया था। विस्थापित पारसियों के ऋण चुकाने का तरीका उन आतताइयों को भी अपनाना चाहिए जो हजार-आठ सौ वर्ष हुकुमत करके रच बस गए और अभी भी विद्रोह के स्वर यदा कदा उठा दिया करते हैं।

विषय को जिस प्रकार मैने समझा, चिन्तन-मनन में दस दिन के लगभग 50-60 घन्टे श्रम किया तो इतने पृष्ठ तो मुझे रंगने ही थे। समापन करते हुए यही कहना चाहूंगा कि अस्सी वर्ष के दीर्घकालीन जीवन में, अथर्ववेद के इन छै मंत्रों की अंतिम वाक्यावली के समर्थन में अनुभूत सत्यों को शाब्दिक आवरण नहीं पहिनाता तो विषय के साथ न्याय नहीं होता न ही लेखन का असर होता। सत्य अत्यन्त विश्वसनीय एवं मार्मिक होता है। महर्षि दयानन्द भी सत्य को चाशनी में लपेट कर नहीं परोसते थे। उनका अनुचर, मैं, इस तथ्य को कैसे भूल सकता हूं ? द्वेष का सत्य जैसे सुना, समझा वैसा ही अंकित किया है। इसलिये यह लेख अनेक व्यक्तियों को, निकटस्थ लोगों को भी सत्यो-द्घाटन के कारण अप्रिय प्रतीत होगा। प्रियजनों के स्नेह-आदर से वंचित होने का भय शक्तिशाली विरोधियों के कोप का भय, विद्वानों और स्वयंभू संन्यासियों की कृपा से वंचित हो जाने की आशंका, मुझे सत्य का यथार्थ वर्णन करने से नहीं रोक पाया। मृत्यु के मुहाने पर खड़ा हुआ, मैं सोचता हूं-

चाह गई, चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।

जिन्हें कछु न चाहिए वे ही शहंशाह।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज रमेश नगर करनाल हरियाणा को एक पुरोहित की आवश्यकता है जो सभी संस्कार करवाने में सक्षम हो। यदि विवाहित हो तो उनकी पत्नी को विद्यालय में शिक्षिका के तौर पर भी रखा जा सकता है। आवास का प्रबन्ध आर्य समाज की ओर से होगा। सम्पर्क सूत्र- 9355604281 व 9034860417 पर सम्पर्क करें।

-मन्त्री आर्य समाज रमेश नगर करनाल

पृष्ठ 2 का शेष-वनस्पतिक भोजन व....

अत्यधिक शक्ति होती है। फिर हम निश्चय ही इन किरणों का सेवन करने के लिए प्रातः सूर्योदय के साथ ही अपनी शैय्या को छोड़ निकल जावें।

४. हम प्रातः अपनी आंखों को सूर्य किरणें दिखावें-सूर्य की यह किरणें हमारी दृष्टि के लिए भी उत्तम होती हैं। इस लिए ही मन्त्र कह रहा है कि हे सूर्य देव ! मैं तुझे अपनी दृष्टि-शक्ति की रक्षा के लिए ग्रहण करता हूं। जब हम इस पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि वास्तव में सूर्य हमारी आंखों में ही निवास करता है। यह ही हमारी आंखों का स्वामी है। यदि सूर्य न हो तो हमारी आंखों का भी कोई प्रयोजन नहीं रह जाता क्योंकि हमारी आंख तब ही देख पाती है, जब प्रकाश हो। अन्धेरे में तो यह देख ही नहीं सकती। जब प्रातःकाल की सूर्य की शीतल किरणें इन आंखों पर पड़ती हैं तो आंखों को भी शीतलता मिलती है। इन्हें भी आराम मिलता है तथा इन में देखने की शक्ति बढ़ती है।

सूर्य की किरणों से हमारी आंखों की देखने की शक्ति बढ़ती है इसलिए ही मन्त्र के माध्यम से मैं यह कह रहा हूं कि जब मैं सूर्य की किरणों को देखता हूं तो मेरी आंखों की ज्योति बढ़ती है। अतः मैं सूर्य की ओर मुंह करके बैठ जाता हूं तो सूर्य की यह निर्मल, पवित्र किरणें मेरी आंखों में मेरी दृष्ट शक्ति का प्रवेश करवाती हैं। जब हम ठीक प्रकार से अपनी आंखों को सूर्य की किरणों का प्रवेश कराते हैं तो हमारी आंख की सब निर्बलताएं, सब दोष, सब रोग दूर हो जाते हैं।

५. सूर्य-किरणों से हमारे सब अंगों में शक्ति आती हैं-यह सूर्य ही है, जो माननीय है, पूजनीय है, मानव की सब प्रकार की शक्तियों को बढ़ाने वाला है।

इन शब्दों में यह मन्त्र हमें बता रहा है कि सूर्य के माध्यम से ही जीवमात्र जीवित है। जीव को जीव तब ही कहा जाता है क्योंकि उसमें जीवन है। यदि इस में जीवन न हो तो इसे जीव कह ही नहीं सकते। जीव में जो जीवनीय शक्ति है, उस शक्ति का प्रमुख आधार सूर्य ही है। इस लिए यहां कहा गया है कि तू ही सब शक्तियों को देने वाला है।

जब हम वेद के इस तथ्य पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि हमारे जितने भी भोज्य पदार्थ हैं, जिन के उपभोग से हमारी क्षुधा शान्त होती है तथा हमारा जीवन आगे बढ़ता है, उन सब की उत्पति इस सूर्य की किरणों ही के कारण होती है। हम जो प्रतिदिन अपनी दिनचर्या करते हैं, स्वाध्याय करते हैं, व्यापार करते हैं अथवा अपने जीवन का कोई भी व्यवसाय करते हैं तो वह भी इन किरणों के सहयोग से ही करते हैं। हम जो कुछ भी देखते हैं, वह सब भी सूर्य की इन किरणों का ही परिणाम है। इन सब से एक तथ्य जो सामने आता है, वह यह है कि सूर्य ही हमारे सब कार्यों का केन्द्र है। यदि सूर्य न होता तो हम अपने यह क्रिया क्लाप तो क्या, हम अपने जीवन के विषय में भी कुछ नहीं कह सकते, कुछ नहीं सोच सकते।

सूर्य हमारी सब शक्तियों का अध्यापन करने वाला है। सूर्य ही हमारी सब शक्तियों को बढ़ाने वाला है। इसकी किरणों के सम्पर्क में आने से ही हमारे शरीर के सब अंग-प्रत्यंग बढ़ते हैं, फ़लते-फ़ूलते हैं तथा ठीक से कार्य करते हैं। इन को शक्ति मिलती है। इसलिए सूर्य का सेवन, सूर्य का सम्पर्क हमारे लिए आवश्यक है।

विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ धूमधाम से सम्पन्न

वैदिक सत्संग परिवार पंजाब के स्थापना दिवस पर आयोजित विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी बड़ी धूम धाम से सम्पन्न हुआ। महायज्ञ में यज्ञ ब्रह्मापूज्य आचार्य दिवाकर भारती ने कहा यज्ञ करने का आदेश वेदों में दिया गया है यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठ कर्म श्रेष्ठ कर्म करने से मनुष्य संसार सांगर तर जाते है अर्थात् मनुष्य को सदैव श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए। यज्ञ आचार्य पूज्य पं. सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने यज्ञ उपदेश करते हुए कहा यज्ञ हमें त्याग समर्पण बलिदान दान की भावना सिखाता है यज्ञ करने वाला देव कहलाता है। मानसा से पधारे आचार्य श्री महावीर प्रसाद जी ने श्री राम के आदर्शों को स्व जीवन में अपनाने पर बल दिया श्री राम का चरित्र सबका बने तभी राम कथा सफल होती है, सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन नरेन्द्र कुमार सूद, अरुण शुक्ला, बहिन परिहार उप प्रधान विमल देव सेठी ने मधुर भजनों से सभी का मन मोह लिया।

इस समारोह में श्री शक्ति पाल खजुरिया (डिप्टी RCF) पवन अग्रवाल वरिष्ठ कांग्रेसी नेता सरदार बलजीत सिंह वाजवा सचिव मान्य योग श्री सरदार राण गुरजीत सिंह मंत्री पंजाब सरदार व अन्य प्रतिष्ठित सदस्य शामिल हुए. संस्था की ओर से प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं, वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित किया गया तथा जरूरतमंदों को राशन वितरित किया गया अन्त में युवा क्रान्तिकारी संन्त पूज्यपाद् स्वामी ब्रह्मवेश जी महाराज ने आशीर्वाद देते हुए समाज में ऐसे कार्यक्रमों के करने पर बल दिया, मानव मानव बनकर मानवता की सेवा करें। संस्था अध्यक्षा प्रमिला अरोड़ा ने धन्यवाद करते हुए स्त्री शिक्षा महिला के अधिकार समाज में महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार भ्रूण हत्या, आदि समस्याओं पर चर्चा करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपकारों को याद किया। यह संस्था यज्ञ योग एवं समाज में व्याप्त बुराईयों के प्रति, समाज के हर वर्ग के प्रति कार्य करती है। इस विराट भक्ति संगम में विभिन्न सामाजिक धार्मिक संस्थाओं में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

-भारतभूषण शर्मा प्रचार मंत्री वैदिक सत्संग परिवार पंजाब

स्वामी सर्वानन्द जी का जन्मदिवस मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर में दिनांक 9 अप्रैल को स्वामी सर्वानन्द जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज के प्रधान श्री गुरबचन आर्य की अध्यक्षता में बड़े धूमधाम से मनाया गया। यह कार्यक्रम सुबह 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक चला जिसमें मथुरा से आए संस्कृत विद्यालय के आचार्य जी, राजस्थान से आए भजनोपदेशक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महापदेशक श्री पं. विजय शास्त्री, संगीतरत्न श्री अरूण वेदालंकार, एवं लगभग पांच सन्यासी भिन्न-भिन्न आश्रमों से पधारे हुए थे। सुबह यज्ञ के पश्चात भजनों व प्रवचनों का कार्यक्रम बहुत सुन्दर माहौल में हुआ। आर्य समाज पठानकोट, दीनानगर, धारीवाल, बटाला, फतेहगढ़ चूड़ियां, घरोटा, शाहपुर कण्डी से आए हुए सदस्य एवं अधिकारी गणों ने इस उत्सव में योगदान दिया। लोकल शहर से लगभग 200-250 स्त्री पुरूषों की हाजिरी थी। दोपहर 12 बजे दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी पधारे। लगभग आधा घण्टा उन्होंने स्वामी सर्वानन्द जी के जीवन पर अपने विचार रखें। पूरे 1 बजे शान्तिपाठ के पश्चात ऋषि लंगर का सब लोगों ने आनन्द उठाया। प्रधान जी ने आए हुए सभी लोगों का हार्दिक धन्यवाद किया।

गुरबचन आर्य प्रधान आर्य समाज गुरदासपुर

आर्य समाज गान्धी नगर -1 में साप्ताह्कि यज्ञ का आयोजन

आर्य-समाज गान्धी नगर-1 में आज एक विशेष हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें डा० रजनीश के पिता श्री जोगिन्द्र पाल अपनी धर्म पत्नी श्रीमति कृष्णा, एवम् अपने छोटे सुपुत्र रोहित कुमार एवम् धर्म पत्नि श्रीमति रेणु सहित मुख्य यजमान बने, पंड़ित प्रिंस जी ने यज्ञ करवाया, सभी ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियाँ डाली छोटे-छोटे बच्चों ने गायत्री का जाप किया। हवन के पश्चात् श्री राजपाल और पं. प्रिंस ने पथिक जी के दो भजनों का गुणगान किया, ''भूले न भूले न प्रभु याद रहे'' और दूसरा भजने मिल गावो नर, नार महिमाँ वेदां दी'' फिर यजमानों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ में उपस्थित सभी ने जिनमें श्री जगदीश लाल, श्री नत्शा राम श्री ईश्वरदास सपरा, श्री राजपाल एवम धर्मपत्नि श्रीमति संतोष, श्रीमति सुदेश श्री तिलकराज एवम् धर्मपत्नि श्रीमती लीला देवी, श्री अशोक कुमार, श्री निखिल, अंसुमन, पंकुश, सभी ने बड़ी श्रद्धा से आहुतियाँ डाली, प्रशाद की सेवा भी यजमान परिवार ने की, और आर्य समाज को 1100/- दान भी दिया। हम इस परिवार के अति आभारी हैं शान्तिपाठ के साथ यज्ञ की समाप्ति की गई।

आर्य समाज गांधी नगर-1 के साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ में आहुतियां डालते हुए आर्यजन

-राजपाल प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की घोषणा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरूदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के दिनांक 02.04.2017 के साधारण अधिवेशन/ त्रिवार्षिक चुनाव (02.04.2017 से 01.04.2020 तक) के प्रस्ताव संख्या 3 में प्रदत्त अधिकार के अनुसार मैं सुदर्शन कुमार शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निम्न प्रकार सभा के पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य मनोनीत करता हूं।

1. प्रधान	: श्री सुदर्शन कुमार शर्मा जालन्धर	27. अन्तरंग सदस्य	: श्री पी.डी.गोयल एडवोकेट बठिंडा
2. उपप्रधान	: श्री सरदारी लाल आर्य जालन्धर	28. अन्तरंग सदस्य	: श्री वेद आर्य जालन्धर
3. उपप्रधान	: चौ.ऋषिपाल सिंह एडवोकेट जालन्धर	29. अन्तरंग सदस्य	: श्री राज कुमार जालन्धर
4. उपप्रधान	: श्रीमती राजेश शर्मा लुधियाना	30. अन्तरंग सदस्य	: श्री यशपाल वालिया होशियारपुर
5. उपप्रधान	: श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जालन्धर	31. अन्तरंग सदस्य	: श्री मनोहर लाल जी आर्य लुधियाना
6. उपप्रधान	: श्री नरेश कुमार जालन्धर	32. ,, ,,	: श्री योगेश सूद जी मोरिण्डा
7. उपप्रधान	: श्री स्वतंत्र कुमार पठानकोट	33. ,, ,,	: श्री राजेन्द्र कौड़ा रायकोट
8. उप प्रधान	: श्री मुनीष सहगल जालन्धर	34. ,, ,,	: श्री मनोज आर्य फिरोजपुर शहर
9. महामंत्री	: श्री प्रेम भारद्वाज नवांशहर	35. ,, ,,	: श्री चिरंजी लाल मारकण्डा तपा मंडी
10. मन्त्री	: श्री विजय साथी मोगा	36. ,, ,,	: श्री रणवीर शर्मा लुधियाना
11. मन्त्री	: श्री विपिन शर्मा जी जालन्धर	37. ,, ,,	: श्री संत कुमार आर्य लुधियाना
12. मन्त्री	: श्री विजय सरीन 108 ई लुधियाना	38. ,, ,,	: श्री सतीश कुमार शर्मा फरीदकोट
13. मन्त्री	: श्री सुदेश कुमार जी जालन्धर	39. ,, ,,	: श्री शाम लाल आर्य बंगा
14. मन्त्री	: श्री भारत भूषण मेनन एडवोकेट बरनाला	40 ,, ,,	: श्री ललित बजाज कोटकपूरा
15. मंत्री	: श्री रणजीत आर्य जालन्धर	41. ,, ,,	: श्री सुशील वर्मा फाजिल्का
16. मन्त्री	: श्री विनोद भारद्वाज नवांशहर	42. ,, ,,	: श्री सोहन लाल सेठ जालन्धर
17. कोषाध्यक्ष	: श्री सुधीर कुमार शर्मा जालन्धर	43. ,, ,,	: श्री हरीश कुमार शर्मा जालन्धर
18. रजिस्ट्रार	: श्री अशोक परूथी एडवोकेट जालन्धर	44. ,, ,,	: श्री परविन्द्र चौधरी बटाला
19. वेद प्र.अ.	: श्री सत्य प्रकाश उप्पल मोगा	45. ,, ,,	: श्री वीरेन्द्र कुमार कौशिक पटियाला
20. अधिष्ठाता सा.वि.	: श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल नवांशहर	46. ,, ,,	: श्री पुरुषोत्तम चन्द्र शर्मा अमृतसर
21. अधिष्ठाता वी.द	: श्री स्वामी सूर्यदेव जी गोनियाना मंडी	47. ,, ,,	: श्री राकेश मेहरा अमृतसर
22. अन्तरंग सदस्य	: श्री सूर्यकांत जी शोरी बरनाला	48. ,, ,,	: श्री वेद प्रकाश बठिंडा
23. अन्तरंग सदस्य	: श्रीमती विनोद गांधी लुधियाना	49. ,, ,,	: श्री एस.एम.शर्मा लुधियाना
24. अन्तरंग सदस्य	: श्री अरूण सूद लुधियाना	50. ,, ,,	: श्री योगेश प्रभाकर फगवाड़ा
25. अन्तरंग सदस्य	: श्रीमती ज्योति नंदा गुरदासपुर	51. ,, ,,	: श्री विपिन धवन फिरोजपुर
26. अन्तरंग सदस्य	: श्री ऋषिराज शर्मा जालन्धर		

- सुदर्शन शर्मा सभा प्रधान

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।